

## Editorial

बौद्ध धर्म एक शांतिवादी, मानवतावादी और विश्वबंधुत्व की भावना रखने वाला दर्शन है। यदि भगवान बुद्ध के मानवीय विचारों को समाज के हित में प्रयोग में लाया जाए तो मानव समाज के सभी दुख बड़ी आसानी से दूर किये जा सकते हैं। बौद्ध धर्म ऐसे नियमों का संग्रह है जो हमें यथार्थ के सही स्वरूप को पहचान कर अपनी संपूर्ण मानवीय क्षमताओं को विकसित करने में सहायता करता है। बौद्ध दर्शन में परस्पर निर्भरता, सापेक्षता और कारण-कार्य संबंध जैसे विषयों के बारे में चर्चा की जाती है। इसमें समुच्चय सिद्धांत और तर्क-वितर्क पर आधारित तर्कशास्त्र की एक विस्तृत व्यवस्था है जो हमें अपने चित्त की दोषपूर्ण कल्पनाओं को समझने में सहायता करती है। बौद्ध नीतिशास्त्र स्वयं अपने लिए और दूसरों के लिए हितकारी और हानिकारक बातों के बीच भेद करने की योग्यता पर आधारित है। बौद्ध धर्म मूलतः अनीश्वरवादी और अनात्मवादी है। अर्थात् इसमें ईश्वर और आत्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं किया गया है। बुद्ध ने सांसारिक दुखों के संबंध में चार आर्य सत्त्यों का उपदेश दिया और मध्यम मार्ग बता कर रास्ते दिखाए।

मध्यम मार्ग का उपदेश देते हुए बुद्ध ने कहा कि मनुष्य को सभी प्रकार के आकर्षण और कायाक्लेश से बचना चाहिए। अर्थात्, न तो अत्यधिक इच्छाएं करनी चाहिए, न ही अत्यधिक तप (दमन) करना चाहिए, बल्कि इनके बीच का मार्ग अपना कर दुःख-निरोध का प्रयास करना चाहिए। सम्यक का अर्थ दो अतियों के बीच मध्यम स्थिति है। दोनों तरह की अति बुरी है। बीच का रास्ता ही ठीक है। बुद्ध का कहना है जो व्यक्ति अपनी जीवन-परिदृष्टि ठीक रखेगा, जो सही संकल्प या इरादा रखेगा, जिसकी वाणी अच्छी होगी, कर्म अच्छे होंगे, जिन्होंने जीविका के लिए बेहतर अर्थात् भ्रष्टाचार-मुक्त साधन चुने होंगे, जो अपनी इंद्रियों को नियंत्रण में रखने के लिए व्यायाम करते रहेंगे, वे दुःखमुक्त होंगे। सम्यक वाणी, सम्यक कर्म और सम्यक जीविका 'शील' है और सम्यक प्रयत्न, सम्यक स्मृति व सम्यक समाधि को 'समाधि' कहते हैं। विभिन्न बौद्ध ग्रंथों में इसकी विवेचना की गई है। जैसे शील पांच हैं, जिन्हें पंचशील कहा जाता है। कोई व्यक्ति संघ में शामिल होने के पूर्व इन पंचशील की शपथ लेता है। ये पांच शील हैं- अहिंसा, चोरी न करना, झूठ न बोलना, काम संबंधी व्यभिचार न करना और नशा नहीं करना। ये पांच शील आम जनों के लिए हैं। लेकिन भिक्षुओं के लिए पांच और शील हैं। उनके लिए दिन में कई बार भोजन, आभूषण या कीमती चीजें धारण करना, स्वर्ण-रजत छूना, संगीत, और गद्देदार बिस्तर तक की मनाही है। इसी तरह सूक्ष्म से सूक्ष्मतरंग चीजों पर बौद्धों ने पर्याप्त विमर्श किया है। यह दर्शन पूरी तरह से यथार्थ में जीने की शिक्षा देता है। आज पूरी दुनिया हिंसा, धार्मिक उन्माद, नस्लीय टकराव जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रही है। मानव अस्तित्व के लिए बड़े और गंभीर खतरे खड़े हो गए हैं। इंसान ने जहां विज्ञान, तकनीकी और यांत्रिकी में विकास और उसके उपयोग से अपार समृद्धि हासिल कर ली है, तो दूसरी ओर स्वार्थ, लोभ, हिंसा आदि भावनाओं के वशीभूत होकर वह आपसी कलह, लूट-खसोट, अतिक्रमण जैसे विनाशकारी मार्ग को भी अपना रहा है। अतः आज दुनिया में भौतिक संपदा के साथ-साथ मानव अस्तित्व को भी बचाना आवश्यक हो गया है। इसलिए मनुष्य के विनाशकारी विचारों को बदलना और उस पर नियंत्रण रखना बहुत जरूरी है। बुद्ध ने मानवीय प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए कहा था कि मनुष्य का मन ही सभी कर्मों का नियंता है। अतः मानव की गलत प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने के लिए उसके मन में सद् विचारों का प्रवाह कर उसे सदमार्ग पर ले जाना आवश्यक है। उन्होंने यह सदमार्ग बौद्ध धम्म के रूप में दिया था। आपसी शत्रुता के बारे में बुद्ध ने कहा था कि वैर से वैर शांत नहीं होता। यह सूत्र हमेशा से सार्थक रहा है। अतः वैर को जन्म देने वाले कारकों को बुद्ध ने पहचान कर उनको दूर करने का मार्ग बहुत पहले ही प्रशस्त कर दिया था। उन्होंने मानवमात्र के दुखों को कम करने के लिए पंचशील और अष्टांगिक मार्ग के नैतिक व कल्याणकारी जीवन दर्शन का प्रतिपादन किया था। आज भारत सहित विश्व में जो धार्मिक कट्टरवाद व टकराव दिखाई दे रहा है, वह सबके लिए बड़ी चिंता और चुनौती का विषय है। भारत में सांप्रदायिक दंगे और जातीय-जनसंहारों में अनेक निर्दोष लोगो की जानें गई हैं। अतः अगर भारत में धार्मिक-स्वतंत्रता और धर्म-निरपेक्षता के संवैधानिक अधिकार को बचाना है तो बौद्ध धर्म के धार्मिक सहिष्णुता, करुणा और मैत्री के सिद्धांतों को अपनाना जरूरी है।

Dr Sanghmitra Baudh,  
Editor, Bodhi-Path

## **Editorial (English Version)**

Buddhism is a religion of peace, humanism, and the spirit of scientific inquiry. If the human ideas of Lord Buddha are implemented for the benefit of society, then all forms of suffering in human society can be eradicated with ease. Buddhism is a collection of principles that help us understand the true nature of the self and develop our inherent human potential. In Buddhist philosophy, discussions are held on topics such as mutual relationships, practices, and causes and effects. These involve a detailed system of logic and reasoning that aids in comprehending the vast ideas of the philosophy.

Buddhist ethics are based on the capability to differentiate between what is beneficial and what is harmful, both for oneself and for others. Buddhism fundamentally rejects the existence of an eternal God or soul. Instead, Buddha provided four noble truths regarding social suffering and showed the Middle Path as the way forward.

Through the Middle Path, Buddha taught that humans should avoid all extremes of indulgence and asceticism. They should follow a balanced path that helps alleviate suffering. The essence of equanimity lies in maintaining a balanced state of mind and life, where neither excessive desires nor excessive restraint takes over. A balanced individual is one who controls their senses, practices meditation, and avoids harm to themselves or others. The Buddhist concept of moderation includes a balanced speech, action, and livelihood, referred to as the "Noble Eightfold Path."

Various Buddhist texts explore this philosophy in depth, including the five moral precepts known as the Panchshila. Before joining the monastic order, individuals take vows based on the Panchshila: non-violence, truthfulness, refraining from theft, abstaining from harmful actions, and refraining from intoxication. These vows are a foundation for laypersons but are stricter for monks. For monks, daily life involves adhering to stricter codes of conduct, like abstaining from luxurious items and engaging in meditation, chanting, and other spiritual practices.

This philosophy teaches a way of life rooted in ethical conduct and inner peace. Today, the world is plagued with challenges like violence, political instability, and religious conflicts. Humanity faces grave moral crises, despite the advancements in science, technology, and communication. While these advancements have brought material prosperity, they have also intensified conflicts and divisions among people.

Buddha emphasized the analysis of human emotions and stated that the mind is the ruler of all actions. Therefore, to regulate wrong tendencies, individuals must cultivate noble thoughts and walk on the path of virtue. Buddha offered this path in the form of the Buddhist Dhamma. Regarding mutual cooperation, Buddha said that there is no hatred greater than hatred itself, and this principle remains universally relevant. Thus, recognizing the factors that create hatred and eliminating them was a significant teaching of Buddha.

He propagated the principles of moral and compassionate living through the Panchshila and the middle path, aimed at reducing human suffering. Today, as India and the world witness various religious tensions and conflicts, these challenges have become a matter of concern. In India, incidents of communal violence and caste-based exploitation have harmed numerous innocent lives. Hence, if India is to uphold secularism and religious freedom, it must adopt the principles of Buddhist equality, compassion, and non-violence.